Worksheet-6 Subject: - Hindi Class: - V Teacher: - Mrs. Meera

Name: _____ Class & Sec: _____ Roll No. _____ Date: 24.04.202

# 2 शिष्टाचार

स्कूल से आते ही अदिति ने अपना बैग रखा और बोली– "माँ! कल हमारे विद्यालय में कहानी लेखन प्रतियोगिता है जिसमें सभी बच्चों को ऐसी कहानी लिखनी है जिसमें शिष्टाचार, मधुर वाणी, विनम्रता की सीख हो।" "अच्छा यह तो बहुत अच्छी बात है।"– माँ बोलीं।

"माँ क्या आप इसमें मेरी सहायता करेंगी, क्या आप मुझे शिष्टाचार आदि के बारे में बताएँगीं।" माँ ने कहा– "अदिति, पहले तुम हाथ-मुँह धोकर खाना खा लो। फिर मैं तुम्हें शिष्टाचार के बारे में बताती हूँ।" अदिति ने तुरंत हाथ-मुँह धोए और खाना खाया। खाना खाते ही वह माँ के पास आकर बैठ गई। माँ ने कहा– "बिटिया! जब हम दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं और उनकी बातों का विनयपूर्वक उत्तर देते हैं तो वह शिष्टाचार कहलाता है। शिष्टाचार का पहला गुण ही विनम्रता है। हमारी वाणी में, हमारे व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए।"

अदिति बोली– "माँ, विनम्रता क्या केवल बड़ों के प्रति होती है?" माँ ने समझाते हुए कहा–"नहीं बिटिया, विनम्रता केवल बड़ों के प्रति ही नहीं होती, बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव होना चाहिए। हमें सभी से बोलते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी वाणी में मिठास हो, कटुता नहीं।"

अदिति ने कहा–"माँ, क्या मधुर वाणी बोलने से सब प्रसन्न हो जाते हैं?" माँ ने कहा–"हाँ चलो आज मैं तुम्हें मधुर वाणी से संबंधित एक कहानी सुनाती हूँ, जिसे तुम अपने प्रतियोगिता में भी लिख सकती हो।"

**अध्यापन संकेत–** इस पाठ के माध्यम से बच्चों को मीठा बोलने के लिए प्रेरित कीजिए। उन्हें बताइए कि जो लोग मीठा बोलते हैं उन्हें सभी पसंद करते हैं।



0

प्राचीन काल की बात है। एक राजा था। वह बहुत ही विनम्र स्वभाव का था। सारी प्रजा राजा के शिष्ट व्यवहार से बहुत प्रसन्न थी। एक बार राजा अपने सैनिकों और मंत्रियों के साथ जंगल में शिकार के लिए निकला। शिकार ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे लोग बहुत दूर निकल गए, मगर उन्हें शिकार नहीं मिला। दोपहर हो रही थी, इसलिए गर्मी भी बढ़ने लगी। राजा को प्यास लगी। सैनिकों ने आस-पास पानी की बहुत तलाश की। दूर-दूर तक कोई नहीं, कुआँ या तालाब कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, जहाँ पर पानी मिले।

वे पानी की तलाश में भटक रहे थे। तभी उन्हें एक कुटिया दिखाई पड़ी। सैनिकों को लगा कि वहाँ अवश्य ही कोई रहता होगा तो उसके पास पानी होगा। राजा ने एक सैनिक को वहाँ से पानी लाने का आदेश दिया।

सैनिक पानी लाने के लिए कुटिया में गया। वहाँ एक साधु ध्यानमुद्रा में बैठे थे। सैनिक कुछ ही देर में बिना पानी लिए लौट आया। राजा ने पूछा–"क्या तुम्हें वहाँ पानी नहीं मिला?" सैनिक ने कहा–"राजन्! उस कुटिया में एक साधु रहता है। मेरे बार-बार पानी माँगने पर भी उस साधु ने मुझे पानी नहीं दिया। लगता है, वह साधु अंधा-बहरा है।"

राजा ने इस बार मंत्री को पानी लाने के लिए भेजा। परंतु कुछ देर बाद मंत्री भी खाली हाथ लौट आया। राजा आश्चर्यचकित रह गया। इस बार राजा ने स्वयं कुटिया में जाने का निश्चय किया। राजा ने कुटिया में जाकर वहाँ बैठे साधु को प्रणाम किया। फिर विनम्रतापूर्वक कहा–"साधु महाराज! मुझे बहुत प्यास लगी है। क्या मुझे यहाँ थोड़ा-सा जल मिल सकता है?" साधु ने कहा–"आइए राजन्! आपका स्वागत है।"

इतना कहकर साधु ने राजा को सम्मानपूर्वक बैठाया। तत्पश्चात् शीतल जल पिलाया। फिर कहा–"राजन्! आप चाहें तो थोड़ी देर विश्राम भी कर सकते हैं।"

यह देखकर राजा चकित था कि साधु ने सैनिक और मंत्री को पानी नहीं दिया और उसका स्वागत कर रहे हैं। उसने पूछ ही लिया– "साधु महाराज! अभी कुछ देर पहले मेरे सैनिक और मंत्री आपके पास आए थे। क्या तब आपके पास पानी नहीं था?" साधु मुसकराए और बोले–"हे राजन्! पानी तो तब भी था। परंतु आपके सैनिक और मंत्री का व्यवहार सभ्य नहीं था। उनकी वाणी मधुर नहीं थी। उन्होंने दूर से ही कहा–"ओ, पानी है क्या?" मैं चुप रहा । फिर पास आकर बोले– "ओ, तो तू अंधा है! पर यह तो बता सकता है कि पानी कहाँ से मिलेगा?" उसके बाद भी मैं शांत रहा तो बोले–"लगता है, तू अंधा ही नहीं, गूँगा और बहरा भी है।" इतना कहने के बाद वे बड़बड़ाते हुए चले गए। आपका व्यवहार शिष्ट था। इसलिए मैंने आपको पानी पिलाया।"

कुछ रुककर साधु ने कहा–"हे राजन्! शिष्टचार एक अद्भुत गुण है जो मनुष्य को न सिर्फ सम्मान दिलाता है अपितु उसके कार्य को भी सुगम बनाता है।"

राजा बोला–"हे साधु महाराज! आप बिलकुल सही कह रहे हैं। मैं अपने सैनिकों और मंत्रि के साथ-साथ प्रजा को भी शिष्टाचार की शिक्षा लेने के लिए प्रेरित करूँगा।"

अदिति बोली–"माँ, मैं समझ गई हूँ कि शिष्टाचार वह व्यवहार है कि जिसके द्वारा दूसरों तथा अपने मन को खुशी मिलती है। इसके विपरीत अशिष्ट व्यवहार से दूसरों का मन दुखी होता और उससे स्वयं को भी हानि होती है।"

## श्रुतलेख (Writing Skills)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्राचीन | व्यवहार | ध्यानमुद्रा | शीतल | शिष्टाचार |
| विश्राम | मधुर | शिष्ट | अद्भुत | प्रेरित |

## शब्द-अर्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कटुता | – कड़वाहट | प्राचीन | – पुराना | विनम्र | – नम्र, विनयी |
| शिष्ट | – अच्छे स्वभाव वाला, सज्जन | | | ध्यानमुद्रा | – ध्यान की अवस्था |
| तत्पश्चात् | – बाद में | सभ्य | – शिष्टता | अद्भुत | – अनोखा |
| सुगम | – सरल, आसान | प्रेरित | – प्रेरणा कार्य | हानि | – नुकसान |

# अभ्यास (Comprehension Skills)

(फॉरमेटिव एवं समेटिव मूल्यांकन)

**पाठ-ज्ञान**

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### मौखिक

(क) अदिति के विद्यालय में कौन-सी प्रतियोगिता थी?

(ख) शिष्टाचार का पहला गुण क्या है?

(ग) राजा का स्वभाव कैसा था?

(घ) राजा और उसके सैनिक किसकी तलाश में भटक रहे थे?

(ङ) ध्यानमुद्रा में कौन बैठा था?

### लिखित

(क) शिष्टाचार क्या है?

.....

.....

(ख) माँ ने अदिति को क्या समझाया?

.....

.....

गृह कार्य